जॉर्ज संतायना (J. Santayana)

"एक दार्शनिक"

जन्म : 16 दिसंबर, 1863, मैड्रिड स्पेन
मृत्यु : 26 सितंबर 1952, रोम, इटली
इनसे प्रभावित : फ्रेडरिक नीत्शे, अरस्तु, प्लेटो, बारूथ स्पिनोज़ा
राष्ट्रीयता : अमेरिकी, स्पेनी
शिक्षा : हारवर्ड कॉलेज, बॉस्टन लैटिन स्कूल

बीसवी शताब्दी के प्रमुख भाववादी सौन्दर्यशास्त्री जॉर्ज संतायना कला को संवेगों की अभिव्यंजना के रूप में स्वीकार करते है। इनकी दृष्टि मे ललितकलाओं मे सौन्दर्य भावना शुद्ध रूप मे व्यक्त होती है, इसलिए सौन्दर्यशास्त्र का विषय व्यापक अर्थ में सौन्दर्य चिन्तन है।

संतायना कला का विषय सौन्दर्य मानते है इसी कारण कला तथा आनन्द तद्रूप है। इन्होंने विषयगत व अनुभूति रूप आनन्द की वस्तुगत सत्ता निरूपित की तथा सौन्दर्य की परिभाषा निश्चित करते हुए कहा कि सौन्दर्य का निर्माण आनन्द को वस्तुबद्ध करने से होता है। इसलिए वह वस्तुबद्ध आनन्द है अर्थात् सौन्दर्य वह आनन्द पर्याय है। इनके अनुसार कला - विषयक आनन्द अन्य प्रकार के आनन्द से भिन्न होता है। इनकी मान्यता है कि सभी प्रकार का आनन्द सौन्दर्यबोध नहीं होता। कला का आनन्द सौन्दर्य - बोध का आनन्द है। सामान्य आनन्द की अपेक्षा सौन्दर्य - बोध आनन्द कलात्मक परितोष की नि:स्वार्थता

Scanned with CamScanner

मे निहित रहता है। आनन्द के दूसरे रूपों मे हम अपनी इन्द्रियों तथा वासनाओं का परितोष (satisfaction) करते है। प्रकृति तथा मूर्ति-विधायनी कलाओ के सौन्दर्य का आस्वाद से क्षय नहीं होता तथा किसी अन्य दर्शक को प्रभावित करने की भी पूर्ण क्षमता स्थित रहती है।

जॉर्ज सान्तायाना ने अपने "सेन्स ऑफ ब्यूटी" नामक निबन्ध मे लिखा है - हमें जो कुछ सुन्दर लगता है, उसे हम चाहते है कि दूसरे भी देखे और उसकी हमारी तरह सराहना करें। हम ऐसा इसलिए सोचते है कि सौन्दर्य वस्तु मे है, मस्तिष्क मे नहीं और उसके योजक तत्व है - रंग, अनुपात या आकार। हमारा यह दृष्टिकोण केवल ऊपरी सतह तक ही सीमित रहता है, केवल उसी मे जो बाहर से रूपवान और आकर्षक प्रतीत होता है। जॉर्ज सान्तायाना ने इस लोकोक्ति का खण्डन किया है। उन्ही के शब्दों मे "दिस नोशन इज रैडिकली एब्सर्ड एण्ड कॉन्ट्रेडिक्टरी"। उनके अनुसार सौन्दर्य मूल्य है और उसके स्वतंत्र अस्तित्व को भी कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता। सौन्दर्य वस्तु मे नहीं, देखने मे होता है, अन्य किसी दूसरे रूप मे नहीं। कितनी ही सुन्दर वस्तु क्यो न हो यदि प्रेक्षक को उसमे लालित्य नहीं दिखाई देता तो उसकी दृष्टि मे वह सुन्दर नहीं है। सौन्दर्य से अनिवार्यत: आनन्द की अनुभूति होती है। सान्तायाना के मतानुसार वह एक भावात्मक तत्व है, हमारा आनन्द है जिसे हम भूल से वस्तु के गुण के रूप मे समझ बैठते है। गुण के रूप सौन्दर्य

Scanned with CamScanner